IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

‘‘माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन’’

रीमा शर्मा [1] डॉ. शालिनी पाण्डेय [2]

शोधार्थी, (शिक्षा) आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर म.प्र .।

प्राचार्या, उदय एज्यूकेशन कालेज, पचेरा, जिला भिण्ड म.प्र.।

सारांश

f”ाक्षण एक सुनियोजित एवं क्रमबद्ध व्यवस्थित प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत उदे”यों का विकास एवं निधारण करना अनुरूप प्रवृत्ति अनुदे”ानात्मक नियोजन एवं योजना क्रियान्वयन करना तथा उदे”यों की उपलब्धि के परिणाम हेतु f”ाक्षक कार्य संतुश्टि का प्रभावी होना अत्यन्त आव”यक है। उददे”य के रूप में सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत f”ाक्षकों की कार्य संतुश्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। सरकारो एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूश f”ाक्षकों की कार्य संतुश्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला f”ाक्षकों की कार्य सन्तुश्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तुत अध्ययन हेतु अध्ययन में गुना भाहर के सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के 200 पुरूश f”ाक्षकों व 200 महिला f”ाक्षकों का चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के उपकरण के रूप में (सिंह अमर एवं भार्मा टी. आर) द्वारा निर्मित कार्य संतुश्टि मापनी का प्रयोग किया गया है। सांख्यकीय प्रविधि के रूप मं मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं टी–मान का प्रयोग किया गया निश्कर्श स्वरूप पाया गया कि सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत f”ाक्षकों में f”ाक्षक कार्य संतुश्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

[1]शोधार्थी, (शिक्षा) आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर म.प्र .।
[2]प्राचार्या, उदय एज्यूकेशन कालेज, पचेरा, जिला भिण्ड म.प्र.।

प्रस्तावना

शिक्षा वैयक्तिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का आधार है, जिस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र की आवश्यकताओं, जन–आकांक्षाओं एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है तथा जिसका क्रियान्वयन प्रभावी व कुशल प्रशासकों एवं शिक्षकों के उत्तम शिक्षण कार्य पर निर्भर करता है। शिक्षण का कार्य समस्त कार्यों में सबसे अधिक आवश्यक व पवित्रतम माना जाता है क्योंकि यह बालक के साथ पूरे समाज देश विश्व का कल्याण करती है। शिक्षण की प्रक्रिया निश्चित रूप से अध्यापक शिक्षा पर निर्भर करती है। ि"ाक्षक की प्रभाव"ीलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह अपने ि"ाक्षण व्यवसाय से किस सीमा तक संतुश्ट है क्योंकि एक सन्तुश्ट ि"ाक्षक ही अपने विद्यार्थी, संस्था एवं समाज के प्रति न्याय कर सकता है। कोई भी ि"ाक्षण संस्थान अपने उद्दे"यों को तभी प्राप्त कर सकता है, जब उसमें कार्यरत ि"ाक्षक निश्ठावान अपने कार्य के प्रति सजग व समर्पित और संतुश्ट ि"ाक्षक कार्यरत है। सन्तुश्ट ि"ाक्षक से तात्पर्य ऐसे शिक्षकों से है जो अपनी योग्यताओं के आधार पर ि"ाक्षण अधिगम परिस्थितियों व सुविधाओं को प्राप्त करत हुए आनन्द व संतोश का भाव महसूस करते हो। यह सर्वविदित है कि जो ि"ाक्षक अपने ि"ाक्षण व्यवसाय से सन्तुश्ट होगा वह उन्नत"ील होगा व कार्य में उससे ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों का भौक्षिक विकास भी उत्तम होगा। मनोवैज्ञनिकों ने इस तथ्य को प्रमुखता उजागर किया जो ि"ाक्षण से प्रसन्न एवं सन्तुश्ट होता है वह एक बड़ा उत्पादनकर्ता होता है। ि"ाक्षकों के कार्य संतुश्टि को प्रभावित करने वाले निम्न कारक है–

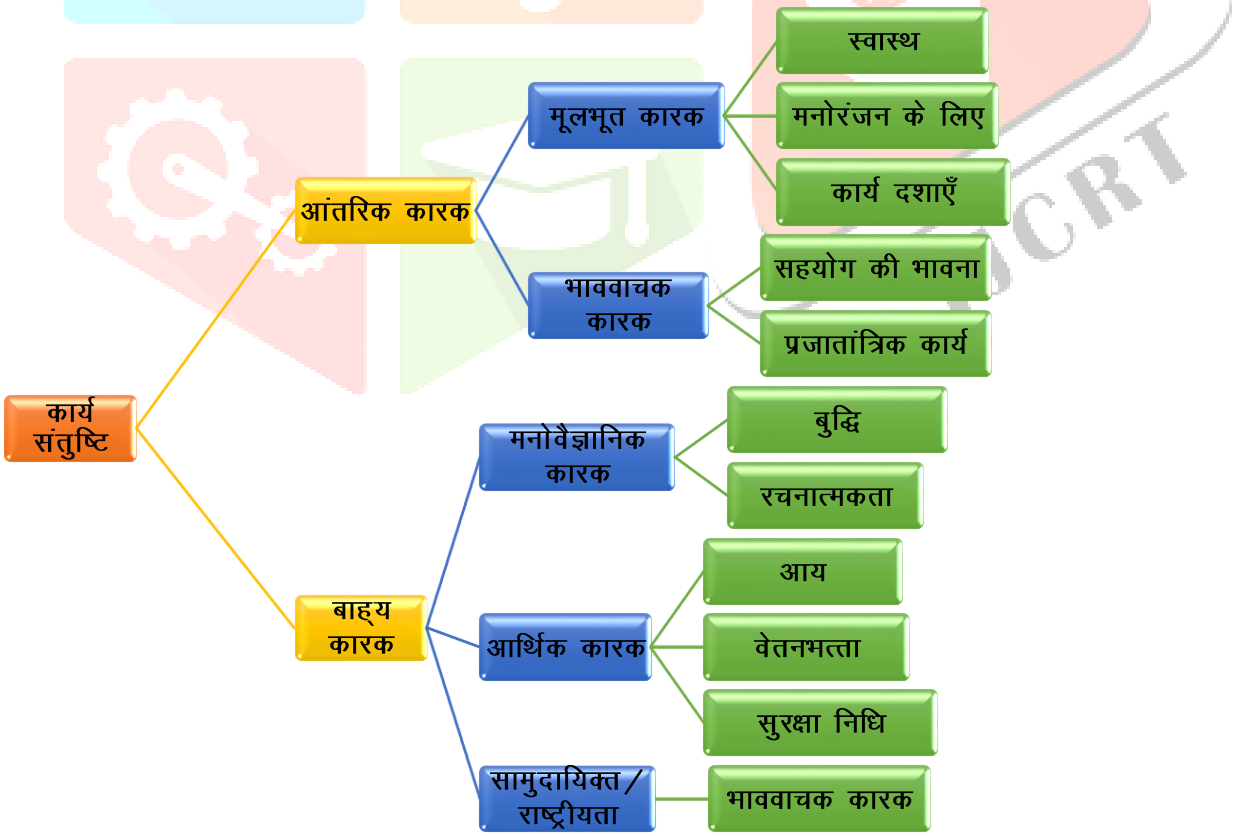

चित्र संख्या 1.1–कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक

f"k्षक क कार्य संतुष्टि में चित्र संख्या 1.1 में उल्लेखित कारक अत्यन्त महत्ववपूर्ण भूमिका निभाते है अर्थात् f"k्षण कार्य के आन्तरिक कारक (स्वयं स्वास्थ्य, मनोरंजन के लिए भ्रमण, अवका"k), नियुक्ति स्थान, आरामदायक, सम्मानपूर्ण, कार्य की द"kाएं (f"k्षण के अलावा अनाव"यक बोझ न होना), संस्था व समाज में उपस्थित सभी लोगों से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध, प्रजातांत्रिक वातावरण व सहयोग की भावना फिर चाहे कि वह संस्था के प्रति हो या विद्यार्थी के प्रति। इसी प्रकार कार्य सन्तुश्टि के बाह्य कारक बुद्धि, वेतन भत्ता, आय, एवं राश्ट्रीयता की भावना है। वर्तमान समय में निजी विद्यालयों में कार्यभार तो अधिक रहता है लेकिन वेतन, कार्यद"kाएं की आवश्यकता नहीं है। आव"यकता पडने पर दीर्घ अवका"k की सुविधा नहीं होती है। जिससे स्पश्ट होता है कि शिक्षकों का कार्य संतुश्टि प्रत्यक्ष के साथ–साथ अप्रत्यक्ष रूप से उनके f"k्षण कार्य को प्रभावित करता है तथा f"k्षण कार्य से विद्यार्थी और उनकी उपलब्धि सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। सन्तुश्ट f"k्षक ही छात्रों के प्रति अपने f"k्षण दायित्वों को महत्व देंगे तथा छात्रों के हित में कार्य करेंगे। प्रत्येक व्यवसाय में कुछ सिद्धांत उत्तरदायित्व मानक सूत्र होते है जो व्यवसाय की उन्नति के लिए आवश्यक होते है।

f"kक्षित बेरोजगारी बढ़ने तथा अन्य विकल्प न मिलने के कारण विव"k होकर व्यक्ति अध्यापक कार्य करन लगे हैं। विव"kताव"k f"k्षक बन जाने पर भी उनके सामने कुछ ऐसे कारक उत्पन्न हो जाते है, जिससे उनकी f"k्षण प्रभाव"kीलता प्रभावित होती है। उनकी योग्यता क्षमतानुसार उचित पद, सेवा सुरक्षा, वेतन, कार्य, प्राप्त साधन सुविधाएं, वातावरण संगठन का अभाव आदि के कारण f"k्षक खिन्न रहते हैं। परिणामस्वरूप वह अपने f"k्षण कार्य के साथ सहयोगात्मक व्यवहार न मिलने से शिक्षकों में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। ऐसी परिस्थितियों मे f"k्षक प्रभावपूर्ण f"k्षण करने में सक्षम नहीं हो पाते है। वे अपने कर्तव्यों व उत्तरदायित्वों का पालन, उचित प्रकार से नहीं कर पात साथ ही f"k्षा विद्यार्थियों को उनके परिवार, समाज व दे"k के प्रति दायित्वों की जानकारी प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे जिसका प्रभाव समाज व राश्ट पर पडता है इसलिये एक कु"kल एवं प्रभावपूर्ण f"k्षक के लिए अपने व्यवसाय के प्रति संतुश्ट होना अति आव"यक है। संतुश्टि आन्तरिक गुण है या बाह्य नहीं। कुछ लोग विपरीत परिस्थितियों में भी संतुश्ट दिखाई देते हैं। इस बात को भुलाया नहीं जा सकता है कि सन्तुश्टि के मूल में भी कुछ प्रवृत्तिमूलक और मौलिक परिस्थितियां हैं।

व्यास, एम.वी. (2001) ने प्राथमिक शिक्षकों की कार्य संतुश्टि का उनके लिंग, वैवाहिक स्थिति एवं भौक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया गया कि विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की कार्यसंतुश्टि प्रभावित होती है। शिक्षकों की निम्न भौक्षिक योग्यता से उनकी कार्य संतुश्टि प्रभावित होती है।

मेहरोत्रा (2003) ने अपने अध्ययन में पाया कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षक, निजी विद्यालयों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट होते है साथ ही सरकारी व निजी विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में साथक अन्तर होता है। सोफनेस (2005) ने संगठनात्मक वातावरण व कार्यसंतुष्टि पर फ्लोरिडा में अध्ययन किया और पाया कि इनमें कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है। यादव (2007) ने सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन कर पाया कि सरकारी व गैर सरकारी पुरूष शिक्षकों के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है साथ ही सरकारी व गैर सरकारी अर्थात कुल विद्यालयों के कुल (पुरूष एवं महिला) में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जो”ाी, हरिमा एल. (2008) ने गुजरात राज्य के सौराश्ट्र क्षेत्र बी.एड. प्र”ाक्षित ”ाक्षक तथा बी.एड. प्र”ाक्षणार्थियों की कार्यसंतुश्टि पर अध्ययन किया। पुरूश शिक्षकों की कार्य संतुश्टि एवं उनकी व्यवसायिक जुड़ाव में सकारात्मक सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। माथुर, मधु (2005) ने गैर सरकारी व सरकारी स्कूल अध्यापकों के बीच व्यवसायिक तनाव कार्य संतुष्टि और जीवन गुणवत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि गैर सरकारी स्कूल में कार्यरत अध्यापकों का व्यवसायिक तनाव गैर सरकारी स्कूल में कार्यरत अध्यापकों की तुलना में की तुलना में कम है। अग्रवाल, श्वेता (2015) ने उ.मा. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया (सरकारी एवं गैर सरकारी के सन्दर्भ में) व निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सिंह,जयप्रकाश (2013) ने उ.प्र. के स्वतित्तपोषितकॉलेजो में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में सम्बन्ध पर अध्ययन किया। अध्ययनोंपरान्त निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व शिक्षण दक्षता में सकारात्मक व सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

अतः उपर्युक्त विवेचन के फलस्वरूप शोधार्थी के मस्तिष्क में कुछ स्वाभाविक जिज्ञासायें एवं प्रश्न चिन्ह उत्पन्न हुए जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन का कारण बने। वह जिज्ञासायें एवं प्रश्न निम्न है

1. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्य सन्तुष्टि की स्थिति क्या है?
2. क्या सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्य सन्तुष्टि में अन्तर होता है?
3. क्या सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्य सन्तुष्टि में विभिन्नतायें प्रेक्षित होती है अर्थात अन्तर होता है।

‘‘माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन’’

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

माध्यमिक विद्यालयः–

आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार''ऐसा विद्यालय जिसमें 11 वर्ष से 16 या 18 वर्ष तक युवा समूह होते है'।

शिक्षा संहिता 1963 के अनुसार ''माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य ऐसे विद्यालय से है जिसमें निम्न कक्षाओं से आठवींकक्षा तक हो''।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों से आशय जिसमें छठवीं कक्षा स्तर से आठवीं कक्षा स्तर की शिक्षा प्रदान की जाती है । साथ ही जो म.प्र.बोर्ड स मान्यता प्राप्त हो।

1. सरकारी विद्यालय

पूर्णतया राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालय इनका पूर्ण खर्च राज्य सरकार उठाती है और उसका प्रशासन माध्यमिक शिक्षा निदेशालय एवं जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से नियन्त्रित होता है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में म.प्र. बोर्ड द्वरा मान्यता प्राप्त सरकारी विद्यालय को लिया गया है।

शिक्षक

शिक्षा शब्द कोष (2005)के अनुसार ''किसी शिक्षा संस्था में बालकों या विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य करने वाला व्यक्ति, जिसे स्वयं उपयुक्त शिक्षा प्राप्त करना तथा किसी प्रशिक्षण शिक्षण संस्था से व्यवसायिक प्रशिक्षण लेना आवश्यक होता है''।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक से तात्पर्य किसी मान्यता प्राप्त संस्था में अध्यापनरत हो तथा शिक्षार्थी की अधिगम प्रक्रिया में सहायक हो।

कार्य सन्तुष्टि

अंजूनेथल (1970) के अनुसार ''कार्य सन्तुष्टि के अंतर्गत कार्य को पसंद करना, कार्य भार करना एवं कार्य के साथ जुड़ी आकांक्षाओं को सम्मिलित करना''।

स्कैन्डिर एवं सिडे(1975)के अनुसार''कार्य सन्तुष्टि पर्याप्त मन की भावना सम्बन्धी कार्य की विद्यमान स्थिति में स्वयं का व्यक्तिगत मूल्यांकन है साथ ही आय एवं सुरक्षा कार्य का परिणाम है। कार्य संतुष्टि आन्तरिक अनुभव का एक स्वरूप है''।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन के संदर्भ में कार्य संतुष्टि से तात्पर्य शिक्षक के अपने विद्यालयी कार्य आन्तरिक एवं बाहय कारकों के प्रति संतुष्टि से है। कार्य संतुष्टि शिक्षकों के लिए एक प्रकार की प्रेरणा है जो उन्हें अपना कार्य सम्पादित करने में आनन्द एवं सुख की अनुभूति कराती है।

अध्ययन के उद्देश्य

- सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

- सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध कार्य की प्रस्तावित कार्य विधि–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य में गुना शहर के सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय का चयन किया गया सरकारी विद्यालयों के 100 शिक्षक एवं 100 शिक्षिकाओं का चयन किया गया तथा निजी माध्यमिक विद्यालयो के 100 शिक्षक एवं 100 शिक्षिकाओं का चयन किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में कार्य सन्तुष्टि शोध को मापने हेतु सिंह, अमर एवं शर्मा, टी.आर. द्वारा निर्मित ''कार्य सन्तुष्टि मापनी''का प्रयोग किया गया ह।

सांख्यिकी विधियॉं–

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों के विश्लेषण में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान का प्रयोग किया गया ।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

चयनित न्यादर्श में सम्मिलित सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करने हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन मान एवं टी–मान ज्ञात किया जो कि निम्न तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत की गयी है–

तालिका संख्या 1

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन मान व टी.मान

विद्यालय प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन मान	टी.मान	सार्थकता स्तर
सरकारी	100	66.54	15.42	**3.31**	**>0.01**
निजी	100	57.26	23.33		

तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित कार्य संतुष्टि के सम्बन्ध में प्राप्त प्राप्तांकों के अवलोकन से विदित होता है कि सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के परिप्रेक्ष्य में प्राप्त मध्यमान मूल्य में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है। सरकारी विद्यालय के शिक्षकों को अपनी नौकरी व प्राप्त पद के कारण समाज में उच्च प्रतिष्ठा, अधिक वेतन, सुविधायें व अधिकार, निजी विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक प्राप्त होते है, परिणामतः सरकारी विद्यालय के शिक्षक परिस्थिति परिवर्तित हाने पर स्वयं के व्यवहार में भी आसानी से परिवर्तन स्वीकार लेते है जिसके कारण वह कार्य संतुष्टि अधिक महसूस होते है। सिद्दीकी (2010) ने शोधोंपरान्त पाया कि गैर सरकारी व सरकारी शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। कपूर, अर्चना (2007) ने भी अपने अध्ययन में निष्कर्षस्वरूप पाया कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की कृत्य–संतोष, निजी विद्यालय की तुलना में उच्च होता है।

अतः उक्त उद्देश्य से निर्मित परिकल्पना ''सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकार किया जाता है।

2. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

चयनित न्यादर्श में सम्मिलित सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी–मान ज्ञात किया जो कि निम्न तालिका संख्या 2 में प्रस्तुत की गई है–

तालिका संख्या 2

विद्यालय प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन मान	टी–मान	सार्थकता स्तर
सरकारी	100	67.26	14.38	**5.75**	**>0.01**
निजी	100	58.68	15.70		

तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित परिणाम स्पष्टतः व्यक्त कर रहे है कि सरकारी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि संबंधी प्राप्त मध्यमान उच्च है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों के पुरूष शिक्षक, निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षक की तुलना में उच्च शैक्षिक योग्यता व धनार्जन उच्च होने के कारण व विद्यालय का कम कार्यभार होने के कारण खुश रहते है जिससे कार्य संतुष्टि उच्च होती है, वहीं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अधिकांशतः कम शिक्षकों को नियुक्त कर उन्हें अधिक शिक्षकों का कार्यभार सौंप दिया जाता है, और किसी कारणवश यथा बीमारी, दुर्घटना के कारण यदि अधिक अवकाश ले लेते है तो उन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया जाता है। नौकरी स्थायित्व भी नहीं होती है, साथ ही उनमें नौकरी चले जाने का भय हमेशा रहता है व सरकारी विद्यालय की तुलना में सेलरी कम होती है, जिसके कारण उनमें कार्य संतुष्टि कम पायी जाती है। अतः शोध से संबंधित परिकल्पना ''सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

3. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन में सम्मिलित सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी–मान ज्ञात किया जो कि निम्न तालिका संख्या 3 में प्रस्तुत की गई–

तालिका संख्या 3

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलनमान व टी–मान

विद्यालय प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन मान	टी–मान	सार्थकता स्तर
सरकारी	100	65.82	16.46	**4.19**	**>0.01**
निजी	100	55.84	15.27		

तालिका संख्या 3 पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के संदर्भ में प्राप्त टी–मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। निजी विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक अधिक कार्य भार तथा कम आय के कारण विचलित रहती है, साथ ही नौकरी में स्थायित्व न होने के कारण इनका मन खिन्न रहता है। अतः निजी विद्यालयों की महिला शिक्षक में कार्य संतुष्टि, सरकारी विद्यालयों को महिला शिक्षकों की तुलना में कम पायी जाती है। उक्त तथ्य की पुष्टि माथुर, मधु (2015) के शोध अध्ययन से भी हो रही है। अतः उद्देश्य स निर्मित परिकल्पना ''सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकार किया जाता है।

4. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन में सम्मिलित सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकएवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकोंकी कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी.मान ज्ञात किया जो कि निम्न तालिका संख्या 4 में प्रस्तुत की गई –

तालिका संख्या 4

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि क संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन मान व टी–मान

विद्यालय प्रकार	यौन–भेद	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन मान	टी–मान	सार्थकता स्तर
सरकारी	पुरूष	100	67.26	14.58	0.69	<0.05
	महिला	100	65.82	16.46		
निजी	पुरूष	100	58.68	15.70	1.07	<0-05
	महिला	100	55.84	15.27		

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों से सम्बन्धित तालिका संख्या 4 में प्रदत्त मध्यमान मूल्य पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के सन्दर्भ में प्राप्त टी.मान मान 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कायरत पुरूष एवं महिला शिक्षक की कार्य संतुष्टि के संदर्भ में लगभग समान है क्योंकि दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की वातावरण परिस्थितियाँ, द"ाायें, समान स्तर की गुणवत्ता, वेतन द"ाायें आदि समान धारण किये हुये है। अतः उक्त उद्दश्य से सम्बन्धित परिकल्पना ''सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षक की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है''को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

1 सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी–मान की गणना की गई जो कि 0.01 की सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

2 सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी–मान की गणना की गई जो कि 0.01 सार्थक स्तर पर सार्थक है।

3. सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी–मान की गणना की गई जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर असार्थक है।

सुझाव

- ❖ प्रस्तुत अध्ययन को प्राथमिक एवं विश्वविद्यालयीन स्तर पर भी किया जा सकता है।
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन को शहरी एवं ग्रामीण स्थिति के तुलनात्मक आधार पर भी किया जा सकता है।
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन में स्कूलों के विभिन्न विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि को देखा जा सकता है।
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है इसी अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग करके निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह श्रद्धा (2018) सरकारी माध्यमिक विद्यालय में अध्यायनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन संतुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन ''इन्टरनेशनल जनरल ऑफ साइटिफिक रिसर्च इन सांइस, इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी वा–4 अंक 6 जन–फरवरी 2018 प्र.सं. 248–253
2. जेम्स, एण्ड हन्नाह,डब्लू.,वचिरा. (2013)*जॉब सेटिस्फेक्शन* फैक्टर्स दैट इनफ्लूएन्स द परफारमेन्स ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल प्रिंसिपल्स इन देयर एडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शन इन मोमबासा डिस्ट्रिक्ट केन्याः इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च 12, फरवरी 2013।
3. सिंह, जयप्रकाश. (2013).*रिलेशनशिप बिट्वीन टीचिंग कॉम्पीटेंस एण्ड सेटिस्फेक्शनः ए स्टडी एमांग टीचर एजुकेटर्स वर्किंग इन सेल्फ फाइनेंसिंग कालेज इन उत्तर प्रदेश.* इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च 35 (2), 72।
4. पब्ला. (2012). ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन अमांग टीचर्स ऑफ प्रोफेशनल कालेज इन पंजाबः इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 10 (1), 67 से 69 (2012)य वाल्यूम नं.(10)
5. अग्रवाल, एस व चंदेल, एन.पी.एस. (2009) अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके कृत्य संतोष पर प्रभाव का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक दिसम्बर 2009 पृष्ठ संख्या 55–66
6. अग्रवाल, श्वेता. (2009).*विभिन्न प्रबंध तंत्रों द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण शिक्षक व्यवहार, शिक्षक प्रभावशीलता कृत्य संतोष एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन.* जनवरी 2011, चतुर्थ अंक पृ. 74।
7. कपिल, एच.के. (1986) सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

8. द्विवेदी, कुन्ती. (1986). *प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कृत्य संतोष का अध्ययन.* अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध (शिक्षा). संदर्भित डी.ई.आई.आगरा।

9. गुप्ता, किरन. एवं निशा, बटू (1978). *उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में कृत्य संतोष का अध्ययन.* अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध. डी. आई. ई. आगरा।

10.भट्टाचार्य जी.सी. (1972) अध्यापक शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 7वां संस्करण, पृ.सं. 313–325